प्रकट रूप भगवान

(भाग १)

सत्य साई बाबा के
वनों से संकलित

H
294.572 Sa 21
P

H
294.572
Sa 21.IP

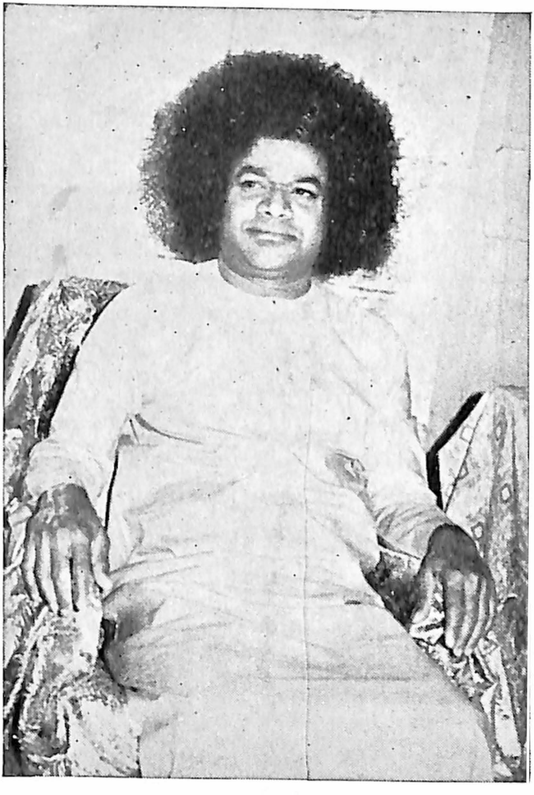

प्रकट रूप भगवान

भाग-१

भगवान् श्री सत्य साई बाबा के
दिव्य प्रवचनों से संकलित

Published under arrangements with and authority of
Sri Sathya Sai Books & Publications Trust,
Prashanthi Nilayam. Distt. Ananthapur A.P. 515134

Library IIAS, Shiml
H 294.572 Sa 21.I P-Sa 21.IV
00097921

मुद्रक :
कंवलकिशोर एण्ड कम्पनी,
करोल बाग, नई दिल्ली - 5, फोन : 5724370

प्रकट रूप भगवान्

"हे भरतपुत्र अर्जुन, जो मोह रहित होकर मुझे पुरुषोत्तम के रूप में जानता है वह सम्पूर्ण ज्ञान का ज्ञाता है और वह मुझे अपने परिपूर्ण हृदय से भजता है"। गीता (१५-१९)

गीता में भगवान् कृष्ण के कहे उपर्युक्त वचन को स्मरण कर हम आध्यात्मिक खोज की यात्रा पर बढ़ चलें। इस पुस्तिका में भगवान् श्री सत्य साई बाबा द्वारा अपने स्वरूप, उद्देश्य एवं उद्यम के विषय में की गई उद्घोषणाओं को संगृहीत कर प्रस्तुत किया गया है ताकि जिज्ञासुओं को भगवान् के नाम एवं रूप की महिमा का दर्शन करने में प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिल सके।

दैवी वाणी के श्रवण एवं भगवान के वचनों

से आप शक्ति एवं साहस प्राप्त करें। इन वचनों में भगवान ने अपनी सत्ता, महिमा, प्रेम, करुणा एवं चिरंतन आनन्द को प्रकट किया है।

इसे आप अपने हृदय के समीप एवं अन्ततः हृदय में ही स्थान दें।

सत्य, धर्म, शांति, प्रेम

सत्य मेरी शिक्षा है, धर्म मेरी जीवन शैली है, शांति मेरे व्यक्तित्व का लक्षण है और प्रेम तो मेरा स्वभाव ही है।

मैं तुम्हारी पुकार अवश्य सुनूंगा

मैं तो सबका सेवक हूँ। तुम मुझे किसी भी नाम से पुकार सकते हो, मैं अवश्य उत्तर दूगां क्योंकि सभी नाम मेरे ही हैं। या समझो कि मेरा कोई विशेष नाम नहीं है। यदि तुम मुझे त्याग दो तो भी मैं तुम्हारे साथ रहूंगा। मेरी दृष्टि में कोई

नास्तिक नहीं है, सभी ईश्वर के द्वारा एवं निमित्त स्थित हैं। सूर्य को नकारने से उसका अस्तित्व नहीं मिट जाता।

परम सत्य

मैं सत्य का भी सत्य हूँ; मैं सत्य की ओर ले जाता हूँ; मैं सत्य को प्रकट करता हूं और जब मनुष्य सत्य को प्राप्त करते हैं तो वे मुझे ही प्राप्त कर लेते हैं।

प्रेम शक्ति

प्रेम ही मेरी परम शक्ति है। मैं आकाश को पृथ्वी में परिवर्तित कर दूं या पृथ्वी को आकाश में परन्तु यह दैवी शक्ति का संकेत नहीं है। सतत विद्यमान, सार्वकालिक एवं प्रभावकारी प्रेम ही उस शक्ति का अनुपम लक्षण है।

ईश्वर का आगमन

जब मनुष्यों में धर्म का अत्यन्त ह्रास हो गया है ऐसे समय में भगवान श्री सत्य साई का पुट्टपर्ति में आगमन उसी प्रकार हुआ है जिस प्रकार दस दिन से भूखे व्यक्ति के सम्मुख स्वादिष्ट भोजन या सूखे एवं खाली जलाशयों के लिए मूसलाधार वर्षा अथवा वर्षों से संतानविहीन परिवार में संतान का जन्म या अत्यन्त दरिद्र व्यक्ति पर सम्पत्ति की वर्षा।

साई की शक्ति

कई लोग मेरे कार्यों को देख कर मेरी प्रकृति का वर्णन एवं उसके बारे में उद्घोषणाएं प्रारम्भ कर देते हैं। ये लोग मेरी पवित्रता, ऐश्वर्य एवं शाश्वत सत्य (जो मैं स्वयं हूँ) का अनुभव करने में असमर्थ हैं। साई की शक्ति अनन्त है। यह अनन्तकाल तक अपने को प्रकट किया करती है। साई की हथेली में

विश्व की समस्त 'शक्तियों' का निवास है।

एकमात्र शरण

दुःख, अप्रसन्नता एवं परेशानी में साई की शरण ही एकमात्र उपाय है। केवल साई ही इन परेशानियों एवं व्याधियों से मुक्त कर हमें स्वास्थ्य, शांति एवं समृद्धि प्रदान करते हैं। जिसके होठों पर साई का नाम है वह 'जीवनमुक्त' है क्योंकि साई का अनवरत स्मरण अहंभाव को नष्ट कर अपरिवर्तनशील अमर स्वरूप का ज्ञान प्रदान करता है। नाम ही भक्त और साई के बीच की कड़ी है। यह भक्त को साई के सम्मुख ले आता है और भक्त को अपनी और साई की एकात्मता का ज्ञान कराता है।

भक्ति से प्रेरित कर्म

मैं केवल भक्ति नहीं चाहता। मुझे तो भक्ति से प्रेरित कर्म की चाह है। अपने सभी वर्तमान

उत्तरदायित्वों को त्याग कर अपने कल्याण के उत्तरदायित्व को अपना लो। फिर तुम इसका चमत्कार देखोगे।

पृथ्वी पर भगवान का विचरण

यदि मैं तुम्हारे बीच नारायण के समान चार भुजाओं में शंख, चक्र, गदा एवं कमल लिए आता तो तुम मुझे संग्रहालय में भिजवा देते और दर्शनार्थियों से पैसे वसूलते। यदि मैं मात्र साधारण मनुष्य के रूप में आता तो मेरी शिक्षाओं का आदर नहीं करते और अपने उद्धार के लिए उनका उपयोग नहीं करते। अतः मुझे इस रूप में अलौकिक विवेक एवं शक्तियों सहित आना पड़ा।

मेरा वास्तविक स्वभाव

प्रत्येक व्यक्ति संसार को अलग-अलग नेत्रों से देखता है और प्रत्येक व्यक्ति का संसार वही होता

है जो वह इन नेत्रों से देखते है—चिन्ताओं, घृणा, ईर्ष्या और लोभ के नेत्रों से दृष्टिगत संसार। मैं केवल प्रेम के नेत्रों से देखता हूँ। मैं यदि चाहूं तो भी घृणा नहीं कर सकता। घृणा एवं क्रोध मेरे अंश नहीं हैं। न ही व्याधि मेरे लिए संभव है। चेताने और सुधारने के लिए मैं कठोर अवश्य हो सकता हूँ लेकिन मैं घृणा कदापि नहीं कर सकता। मैं आनन्द और केवल आनन्द हूँ। मैं ज्ञान, आनन्द और शांति हूँ। वही मेरा वास्तविक स्वभाव है।

मानवता की भलाई हेतु

साई को किसी से किसी प्रकार का कुछ लेना नहीं है। फिर भी सभी के अंतरानन्द हेतु साई के सभी वचन, सभी कर्म एवं सभी चिन्तन सबके कल्याण हेतु हैं। चूंकि साई के लिए सभी कुछ हस्तगत है, अतः साई को किसी भी वस्तु की इच्छा नहीं है।

मैं तुम्हें नहीं त्यागूंगा

तुम चाहे जैसे भी हो, तुम मेरे हो। मैं तुम्हें कभी नहीं त्यागूंगा। तुम जहां भी हो, तुम मेरे निकट हो। मेरी पहुंच के बाहर तुम नहीं जा सकते।

मेरी भाषा, मेरी भूमिका एवं मेरी जीवन यात्रा

मेरी भाषा, मेरी भूमिका, मेरी जीवन यात्रा एवं उद्देश्य को तभी समझा जा सकता है जबकि पूरे चलचित्र को एकाग्रचित हो कर सावधानीपूर्वक देखा जाए एवं कार्य को धैर्य के साथ समझने का प्रयत्न किया जाए।

दैवी शक्ति

मैं तुम्हें यह बता दूं कि मेरी लीलाएं वशीकरण, चमत्कार अथवा जादू नहीं हैं। ये विशुद्ध 'दैवी शक्ति' के अंश है।

संभवामि युगे युगे

गलत मार्ग पर भटके लोगों को सही मार्ग दिखाने और अच्छे लोगों की रक्षा करने हेतु साई बार-बार अवतरित होंगे।

तुम मुझमें, मैं तुममें

तुम्हारा पंछी, मेरा पंख
तुम्हारे पग, मेरा पथ
तुम्हारे नयन, मेरा स्वरूप
तुम्हारी वस्तु, मेरा स्वप्न
तुम्हारा विश्व, मेरी सृष्टि
इसी से मुक्ति यही बन्धन
यही है आदि यही है अंत
तुम मुझमें, और मैं तुममें

बुनियादी सत्य

तुम मुझे तभी समझ सकते हो जबकि तुम स्वयं

को, अपने आधारभूत सत्य को समझ लो। देखो, सुनो, अध्ययन करो, अनुभव करो और विचार करो। तभी तुम मुझे समझ सकते हो। तुम पाओगे कि मैं प्रेम ही हूं, कि मैं प्रेम के द्वारा एक ही वस्तु प्रदान करता हूँ—आनन्द।

मेरा कार्य है सांत्वना, शांति एवं साहस का वितरण करना। अर्थात् मेरे गुण प्राचीन और प्रामाणिक हैं, केवल बाहरी स्वरूप ही नूतन है।

रक्षक

हृदय में मेरे प्रति नैकट्य का विकास करो, तुम्हें इसका फल मिलेगा। तब तुम्हें भी परमानन्द का अंश प्राप्त होगा। विश्वास रखो कि तुम सभी को मुक्ति मिलेगी। जान लो कि तुम्हारी रक्षा हो गई। बहुत से लोगों को ऐसा विश्वास करने में कठिनाई होती है कि स्थिति सुधरेगी, अथवा कि सभी का जीवन

प्रसन्नता और आनन्द से परिपूर्ण होगा और स्वर्ण युग का पुनरागमन होगा। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि इस धर्मस्वरूप दैवी शरीर का अवतरण व्यर्थ में नहीं हुआ है। मानवता पर आए संकट से यह अवश्य मुक्ति दिलाएगा।

प्रेम दीप

मैं तुम्हारे हृदय में प्रेम का दीप जलाने आया हूँ। मैं इस दीप को निरन्तर अधिकाधिक प्रकाशमान करूंगा। मैं किसी विशेष धर्म की ओर से बोलने अथवा किसी मत, संप्रदाय या विचार के प्रचार या अभियान हेतु नहीं आया हूँ।

नाम शक्ति

तुम्हें नहीं मालूम कि मैं कितना दुःखी होता हूँ जब मैं देखता हूँ कि मेरे अवतरण बोध एवं उपदेश के पश्चात् भी तुमने साधना का प्रारम्भ नहीं किया

है। तुम केवल मेरी प्रशंसा और मेरे लिए कृपा निधान, आनन्द सागर आदि शब्दों का प्रयोग मात्र करते हो। नाम को अपनाओ, इसकी मधुरता का चिन्तन करो, रसना पर इसको दोहराओ, इसके स्वाद का अनुभव करो, इसकी सुन्दरता का मनन करो और इसे अपना अंश बना कर साधना में परिपक्व बन जाओ। इसी से मैं प्रसन्न होता हूँ।

अंतर्दृष्टि

मुझे बाहरी नेत्रों से देखने का प्रयास न करो। जब तुम मन्दिर में प्रतिमा के समक्ष खड़े होते हो तो आंख बन्द करके प्रार्थना करते हो। क्योंकि तुम जानते हो कि ज्ञान की भीतरी आँख से ही तुम उसे देख सकते हो। इसलिए मुझसे साधारण तुच्छ वस्तुओं की इच्छा मत करो। मेरी इच्छा करो और तुम्हें इसका फल प्राप्त होगा। लेकिन इसका मतलब

यह नहीं कि तुम उन वस्तुओं को न स्वीकारो जो मैं तुम्हें प्रेमवश कृपा प्रसाद के रूप में प्रदान करता हूँ।

माया का छल

सावधान रहो। मैं तुम्हारे साथ गाता हूँ, वार्ता करता हूँ और अन्य कार्यों में साथ देता हूँ, लेकिन किसी भी क्षण मेरा दैवी स्वरूप तुम्हारे समक्ष प्रकट हो सकता है और तुम्हें उस क्षण के लिए तैयार रहना है। चूंकि दैवत्व पर मानवत्व का आवरण है, अतः तुम्हें इस माया का भेदन कर सत्य का दर्शन करना है।

निर्माण एवं पुष्टि

मैं किसी भी आस्था को समाप्त करने के लिए नहीं, अपितु विभिन्न मतावलम्बियों की उनकी आस्थाओं में ही पुष्टि हेतु आया हूँ ताकि ईसाई श्रेष्ठतर ईसाई, मुसलमान श्रेष्ठतर मुसलमान एवं

हिंदू श्रेष्ठतर हिंदू बन सकें।

प्रत्येक से एकाकार

मैं सभी से एकात्मता के अनुभव में जीता हूं। मैं प्रत्येक वस्तु एवं मनुष्य से एकाकार हूँ। मेरा प्रेम सभी की ओर प्रवाहित होता है और मैं सभी को अपने ही स्वरूप में देखता हूँ। यदि मनुष्य मेरे प्रेम का अपने हृदय के अन्तर से प्रतिदान करता है तो मेरा प्रेम और उसका प्रेम मिल कर उस मनुष्य को उपचारित एवं परिवर्तित कर देते हैं।

मैं सभी के लिए आया हूँ

मैं तुम्हें नहीं त्यागूंगा चाहे तुम मुझे विस्मृत कर दो, क्योंकि मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं सभी के लिए आया हूँ। जो भटक गए हैं, वे भी फिर मेरे पास आएंगे। इस बात में शंका न करो। मैं उन्हें वापिस बुला लूंगा।

दैवी रसायन

यह अवतार दुश्चक्र से बाहर निकलने का मार्ग बताने आया है। अपने एक लाख छोटे-छोटे कर्म एवं चिन्ताएं जो एक-एक पैसे के समान हैं मुझे दे दो। यदि वह सभी असली होंगे तो मैं उनके बदले में तुम्हें अपनी कृपा रूपी एक हजार रु० का नोट दूंगा जो रखने में हल्का और आसान है। हाँ, यदि एक भी दर्द, दुख, चिन्ता या भय नकली हुआ तो नोट नहीं दिया जाएगा।

प्रेम मेरा साधन है

मेरे पास संगठन सम्बन्धी अर्थों में कोई प्रक्रिया यंत्र या तंत्र नहीं है। मेरी कार्य प्रक्रिया सरल है जो प्रेम द्वारा परिवर्तन पर आधारित है। मेरा यन्त्र मानवीय सहयोग और बन्धुत्व है। प्रेम ही मेरा साधन और विनिमय वस्तु है।

मनुष्यों में प्रेम की पुनःस्थापना हेतु

मैं मानवता में प्रेम की पुनःस्थापना एवं निम्नवृत्ति एवं सकीर्ण मनोवृत्ति के निवारण हेतु आया हूँ। लोग मुझे बताते हैं कि मानवता विनाश के कगार पर है, कि पाखंड और घृणा की शक्तियां शीघ्रता से समूचे विश्व पर हावी हो रही हैं तथा चिन्ता एवं भय प्रत्येक देश की गलियों में विचरण कर रहे हैं क्योंकि मेरा आगमन इसी कारण हुआ है। जब दुनिया अव्यवस्था के कगार पर पहुंच जाती है, तब अवतार मनुष्यों के हृदय में उठते तूफान को शांत करने आता है।

दैवी आश्वासन

कृपावृष्टि के अलावा मेरा और क्या कार्य है? दर्शन, स्पर्शन एवं संभाषण के माध्यम से तुम उस कृपा के भागी बनते हो। जब दोनों पिघलते हैं तो

पिघल कर एकाकार हो जाते हैं। मुझे अपने से दूर नहीं वरन् निकट ही समझो। मुझसे कृपा की अधिकारपूर्वक मांग करो। अपने हृदय को मेरे पास लाओ एवं मेरे हृदय को जीतो। तुममें से कोई भी मेरे लिए अनजाना नहीं है। अपने वायदे तुम्हें दूंगा। लेकिन पहले यह देख लो कि तुम्हारे वायदे सच्चे हैं तथा हृदय पवित्र है। बस इतना काफी है।

अंतः प्रतिष्ठित

तुम मुझे चाहो या न चाहो, मैं तुम्हारा हूँ; तुम मुझसे घृणा करो अथवा मुझसे दूर रहने का प्रयत्न करो, फिर भी तुम मेरे ही हो। इसलिए तुम्हारी प्रशंसा प्राप्त करने के लिए मुझे अपने प्रेम अथवा करुणा का प्रदर्शन करने तथा तुम्हें प्रभावित या आकर्षित करने की क्या आवश्यकता है? मैं तुम में हूँ और तुम मुझ में हो। कोई भेद अथवा दूरी नहीं है। तुम

अपने ही घर में आए हो। यह तुम्हारा घर है। मेरा घर तुम्हारा हृदय है।

दैवी उद्देश्य

मेरा कार्य वेदों की महिमा के प्रति तुम्हारी आँखें खोलना एवं तुम्हें यह विश्वास दिलाना है कि वेद वाक्य कभी निष्फल नहीं होते यदि उनका पालन किया जाए। मेरा वेदों के प्रति प्रेम उतना ही घनिष्ठ है जितना कि मानवता के प्रति। मेरा उद्देश्य हैः वेदपोषण, विद्वत्पोषण, भक्त रक्षण एवं धर्म स्थापना।

प्रकाश को उपहार

मैं सत्य का भी सत्य हूं। सत्य इस पृथ्वी पर मनुष्य रूप में क्यों आया है? मनुष्य के हृदय में सत्य की उत्कण्ठा के वृक्ष को लगाने, मनुष्य को सत्य के मार्ग पर आरूढ़ करने, प्रेम पूर्ण निर्देश एवं प्रकाश के चरम उपहार द्वारा मनुष्य को सत्य तक

पहुंचाने में मदद करने।

सभी रूप मेरे हैं

मैं तुमसे प्रायः कहता हूँ कि मुझे इस शरीर विशेष के साथ एकात्म मत करो। लेकिन तुम नहीं समझते हो। तुम मुझे एक विशेष नाम से पुकार सकते हो और यह मान सकते हो कि मेरा एक ही रूप है। लेकिन याद रखो, कोई नाम ऐसा नहीं है जो मेरा न हो और कोई रूप ऐसा नहीं है जो मेरा न हो।

सब लोग आओ

सब लोग आओ और मुझ में स्वयं को देखो क्योंकि मैं स्वयं को तुम सब में देखता हूँ। तुम मेरे जीवन एवं श्वास हो; मेरी आत्मा एवं रूप हो। जब मैं तुम्हे प्रेम करता हूं तो स्वयं से ही प्रेम करता हूं; जब तुम स्वयं से प्रेम करते हो तो मुझ से प्रेम करते हो।

INSTITUTE OF ADVANCED
Acc. No. 97421

साई शिव

इस शिव रात्रि के दिन शिव ही नश्वर मानव को दर्शन देने आए हैं। पर्ति गाँव में रहने वाले, बालों की जटा से गंगा प्रवाहित करने वाले, भ्रूमध्य में नेत्रयुक्त, नीलकण्ठ, कमर में व्याघ्रचर्म, सर्पों के कलाईबन्ध एवं मस्तक पर लाल तिलक से युक्त एवं होठों पर पान की लाली से शोभायमान।

वर्णनातीत दैवत्व

आज ही नहीं बल्कि कभी भी मेरे सच्चे स्वरूप को किसी के लिए भी समझना असंभव है चाहे वह किसी भी साधन द्वारा किसी भी समय तक कितना ही कठिन परिश्रम करे।

आस्था रखो

साई प्रखरतम बुद्धि तथा कुशाग्रतम मस्तिष्क के परे हैं। अतः मुझे समझने का प्रयास मत करो।

आस्था एवं श्रद्धा का विकास करो और प्रेम के द्वारा आनन्द की प्राप्ति करो। यही है जो तुम कर सकते हो। यह करो और लाभ उठाओ।

सर्वव्यापक प्रेम

साई असीम प्रेम है। यही वह प्रेम है जो हमारे चारों ओर के जगत् में व्याप्त एवं विद्यमान है। यह प्रेम तुम्हारे हृदय में सदैव विद्यमान है। अतः तुम जगत् से भिन्न नहीं हो। जगत् साई है तुम सत्य साई हो।

सभी मेरे रूप हैं

स्वयं को मुझ में देखो क्योंकि मैं स्वयं को तुम सब में देखता हूँ। तुम मेरे जीवन हो, मेरी श्वास हो, मेरी आत्मा हो। तुम सभी मेरे विभिन्न रूप हो।

प्रारम्भ में

जब तक मैंने अपनी इच्छा से एक शब्द द्वारा

सृष्टि की रचना नहीं की थी तब तक मुझे जानने के लिये कोई नहीं था। तभी पर्वत उठे, नदियाँ बहने लगीं, पृथ्वी एवं आकाश की रचना हुई। महासागर, समुद्र, धरती, जल क्षेत्र, सूर्य, चन्द्रमा एवं मरुस्थल शून्य से प्रकट हो गये ताकि मेरे अस्तित्व को प्रमाणित कर सकें। सभी प्रकार के प्राणियों—मनुष्य, पशु एवं पक्षियों का आगमन हुआ। मेरे आदेश द्वारा वाक्शक्ति, श्रवणशक्ति, आदि अनेक शक्तियां उन्हें प्रदान की गईं। सृष्टि में प्रथम स्थान मनुष्य को दिया गया और मेरा ज्ञान मनुष्य के मन में स्थापित किया गया।

मार्ग निर्देशक प्रकाश

सभी समय और सभी जगह साई सदैव सहायता करने के लिए उद्यत और इच्छुक रहते हैं। इसी से साई को आनन्द मिलता है।

पवित्र हृदय

प्रेम से परिपूर्ण पवित्र हृदय जब प्रस्तुत होता है तभी मेरा हाथ उसे स्वीकार करने के लिये आगे बढ़ता है। अन्यथा मेरा हाथ हमेशा देता है, लेता नहीं।

ईश्वर का मार्ग

तुम्हारा कल्याण, तुम्हारी प्रसन्नता, तुम्हारी उन्नति एवं तुम्हारे श्रेष्ठ गुण—यही साई को रुचिकर एवं प्रसन्नता से पूर्ण करने वाले हैं।

जब मैं हूं तो डर काहे का

जब मैं हूँ तो डरते क्यों हो? अपनी संपूर्ण आस्था मुझ में रखो। मैं तुम्हारा मार्ग दर्शन एवं रक्षण करूंगा।

तुम पर अवश्य ईश्वर कृपा होगी

सीखने की उत्कण्ठा सहित और उन्नति करने

के लिये तथा स्वयं को मुझ में देखने के लिये मेरे पास आओ। मैं अवश्य तुम्हारा स्वागत करूंगा और तुम्हें राह दिखाऊंगा। तुम पर अवश्य ईश्वर की कृपा होगी।

भय न करो

चाहे तुम कहीं भी हो, मैं सदैव तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम्हारा मार्ग दर्शन एवं रक्षण करूंगा। भय मुक्त होकर मार्ग पर चलते रहो।

जगद्गुरु

मेरे लिए कोई देश अपना या पराया नहीं है। सम्पूर्ण मानवता को धर्म के पथ पर वापिस लाना है।

मानवीय भ्रम

चूंकि मैं तुम्हारे बीच विचरण करता हूँ, तुम्हारी तरह भोजन करता हूँ और तुम से संभाषण करता हूँ; अतः भ्रांतिवश यह विश्वास कर लेते हो कि

यह सामान्य मानवीय प्रकार है।

नाम महिमा

साई नाम सम्पूर्ण विश्व के कौने-कौने को उल्लास और आनन्द से भर देगा।

सर्वव्यापक साई

यदि तुम्हें मुझ से प्रेम है तो तुम्हें सब से प्रेम होगा क्योंकि साई प्रत्येक में हैं। भजनों में तुम गाते हो कि यह जगत् साईमय है। तो फिर तुम केवल साई से प्रेम कैसे कर सकते हो। इस प्रार्थना कक्ष में साई के कई चित्र हैं। तुम इन चित्रों का आदर करते हो। तुम प्रत्येक चित्र को मेरे रूप में ही देखते हो। यदि कोई इनकी बुराई करता है तो तुम्हें यह अच्छा नहीं लगता। तुम चित्रों के समक्ष खड़े होकर आनन्द में "हे स्वामी" कहते हो। याद रखो प्रत्येक मनुष्य मेरा ही चित्र है बल्कि प्रत्येक प्राणी मैं ही हूँ।

'अंता साइमयम्'—साईमय है सारा जग—है न? अतः जब तुम किसी से दुर्व्यवहार करते हो तो मुझ से ही दुर्व्यव्हार करते हो। जब तुम किसी का अनादर करते हो तो मेरा ही अनादर करते हो।

मेरे दैवत्व की झलक

मेरे लिए इच्छा करना भी अनावश्यक है क्योंकि मेरी कृपा उन भक्तों के लिए सदैव सुलभ है जो प्रेम और आस्था से पूर्ण हैं। चूंकि मैं भक्तों के मध्य वार्ता एवं गायन करता हुआ विचरण करता हूँ, अतः विचारशील व्यक्ति भी मेरे सत्य, मेरी शक्ति, मेरी महिमा अथवा अवतार रूप में वास्तविक कार्य को समझने में असमर्थ हैं। जटिल से जटिल समस्याओं को मैं सुलझाने में समर्थ हूँ। अत्यन्त गहन जांच पड़ताल एवं अनुभव किया है, केवल वही लोग कह सकते हैं कि उन्होंने मेरी वास्तविकता की झलक

पाई है क्योंकि प्रेम का ही मार्ग वह राजमार्ग है जो मानवता को मुझ तक लाता है।

मानव जीवन का लक्ष्य

चमत्कार में अवतार की सहज एवं स्वाभाविक अभिव्यंजना होती है। राम का अर्थ है 'आनन्द देने वाला', कृष्ण का अर्थ है 'आकर्षित करने वाला', आनन्द देने वाला अथवा हृदय को आकर्षित करने वाला मेरा कोई भी कार्य 'चमत्कार' बन जाता है। अतः 'चमत्कार' का भी यही परिणाम होता है। चमत्कार का लक्ष्य है मन का संस्कार। इस अवतार द्वारा यह किस प्रकार संपन्न किया जाता है? चमत्कार के द्वारा आकर्षित प्रत्येक व्यक्ति को प्रेमपूर्वक यह समझाने की कोशिश की जाती है कि सभी से प्रेम करो क्योंकि विभिन्न शरीरों में एक ही आत्मा का निवास है और उस सर्वव्यापक प्रेम को

परोपकार में परिणित करो। परिणामस्वरूप उनके मन पवित्र, बुद्धि स्पष्ट एवं हृदय निर्मल हो जाते हैं। इस प्रकार उन्हें इस सत्य का साक्षात्कार हो जाता है कि उनका अन्तःकरण— आत्मा—सर्वव्यापक शाश्वत निरपेक्ष परमात्मा रूपी सागर की तरंग मात्र है। यही साक्षात्कार मानव जीवन का लक्ष्य है।

पथ प्रदर्शन करने तथा प्रेरणा एवं शिक्षा देने हेतु

मैं तुम्हें बता दूं कि मुझे वास्तव में आराम, विश्राम एवं संतोष तब मिलता है जब तुम निवृत्ति एवं सेवा के आध्यात्मिक अनुशासन के विकास द्वारा आनन्द प्राप्त करते हो। मैं सदैव तुम्हारे कल्याण हेतु किसी न किसी कार्य में लगा रहता हूँ हालांकि ऐसा न करने पर न तो कोई मुझे किसी प्रकार की हानि होगी। यद्यपि मुझे कार्यशील रहने की कोई इच्छा नहीं है फिर भी तुम मुझे सदैव क्रियाशील देखते

हो। इसका कारण है कि मैं सभी समय कुछ न कुछ करते रह कर तुम्हें प्रेरणा एवं शिक्षा देना अथवा तुम्हारे लिए उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता हूँ। मैं क्रियाशील हूँ ताकि तुम प्रत्येक क्षण को स्वयं को ईश्वरत्व तक पहुंचाने के स्वर्णिम अवसर में परिवर्तित कर सको।

साई अवतार

इस अवतार में, दुष्टों का संहार नहीं किया जाएगा अपितु उनका सुधार, शिक्षण एवं दोष निवारण कर उन्हें वापिस उसी पथ पर लाया जायेगा जहाँ से वे भटक गये थे। दीमक से पीड़ित वृक्ष को काटे बिना बचाया जायेगा। साथ ही इस अवतार की लीला, महिमा तथा उपदेश के लिये जो केन्द्र बन गया है उसकी जगह दूसरा स्थान नहीं अपनाया जायेगा। इस वृक्ष को और कहीं नहीं लगाया जायेगा। यह अपने जन्म स्थल पर ही विकसित होगा। एक

और विशेषता यह है कि इस अवतार का अपने परिवार एवं कुटुम्बीजनों से कोई लगाव अथवा प्रेम नहीं जैसा कि राम और कृष्ण के अवतार के समय था जबकि लीला का केन्द्र परिवार था। यह अवतार तो केवल भक्तों, जिज्ञासुओं, साधुओं एवं साधकों के लिये है। इसे जप, ध्यान अथवा योग की आवश्यकता नहीं है। इसे किसी की पूजा अथवा योग की आवश्यकता नहीं है। इसे किसी की पूजा अथवा प्रार्थना नहीं करनी क्योंकि यह स्वयं सर्वोच्च है। यह केवल तुम्हें पूजा एवं प्रार्थना की शिक्षा देता है।

दैवी प्रार्दुभाव

यह वह मानवीय रूप है जिसमें प्रत्येक दैवी लक्षण एवं दैवी तत्व का प्रत्येक पक्ष अर्थात् वे सभी नाम और रूप जो मनुष्य ईष्वर के लिये प्रयोग करता है, प्रार्दुभूत हैं।

97921
14/7/2000

Library IIAS, Shimla
H 294.572 Sa 21.I P-Sa 21.IV P
00097921